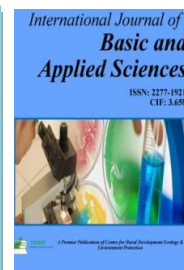


Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: <http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijbas/>

International Journal of Basic and Applied Sciences

(ISSN: 2277-1921) (Scientific Journal Impact Factor: 6.188)

UGC Approved-A Peer Reviewed Quarterly Journal



Research Paper

सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

रंजु कुमारी¹ व डॉ० दीपक कुमार **

शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड

ARTICLE DETAILS

Corresponding Author:

रंजु कुमारी

Key words:

सरकारी और निजी विद्यालय शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि

ABSTRACT

शिक्षा मनुष्य और समाज दोनों का दर्पण मानी जाती है। क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज अपनी सभ्यता संस्कृति और नैतिक मूल्यों की रक्षा करता है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा प्रणाली का प्रथम चरण प्राथमिक स्तर होता है। जो बालक के ज्ञान का आधार तैयार करता है। इसके पश्चात उच्च प्राथमिक स्तर आता है। जो उस आधार को सुदृढ़ बनाकर बच्चे को उच्च शिक्षा की दिशा में अग्रसर करता है। इस स्तर को शिक्षा की नींव कहा जा सकता है। जिस पर सम्पूर्ण शैक्षिक भवन की संरचना टिकी होती है। शिक्षण प्रभावशीलता और कार्य संतुष्टि उन संस्थानों में अधिक देखने को मिलती है। जहाँ शिक्षकों की सेवा शर्तें सुरक्षित स्थायी और अनुकूल होती हैं। एक बार जब व्यक्ति अध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण करता है, तो उससे अपेक्षा की जाती है कि वह निरंतर अपने ज्ञान कौशल और व्यक्तित्व को अद्यतन रखे ताकि वह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकारी एवं गैर-सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। जिससे यह समझा जा सके कि इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों के कार्य व्यवहार और संतुष्टि स्तर में क्या समानताएँ या भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

प्रस्तावना:-

शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यवहार में लाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता रहता है। सीखने की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उसे अनुभव प्राप्त होता है। इन अनुभवों को व्यवहार में लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा मनुष्य व समाज का दर्पण है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करता है और शिक्षा सभ्यता के रूप में इस संसार की उन्नति करने में सहायता करती है। शिक्षा के मुख्य स्तर हैं- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च व उच्चतर शिक्षा है। शिक्षा में इन सभी स्तरों का विशेष स्थान है।

शिक्षा का प्रथम पायदान प्राथमिक स्तर व द्वितीय पायदान उच्च प्राथमिक स्तर है। बालक प्राथमिक स्तर पर आधारभूत ज्ञान प्राप्त करके उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करता है। उच्च प्राथमिक स्तर का स्थान प्राथमिक स्तर के समान महत्वपूर्ण है। यह स्तर बालक के शिक्षा की नींव है, इसके उपरान्त ही शिक्षा रूपी दृढ़ स्थाई भवन का निर्माण हो पाता है। शिक्षक समाज का वह अनिवार्य अंग है जो राष्ट्र और समाज को नई दिशा प्रदान करने में सदैव तत्पर रहता है। शिक्षक के प्रयासों से ही एक स्वस्थ, जागरूक और सशक्त समाज का निर्माण संभव होता है। कोठारी आयोग (1964-66) ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वास्तव में देश का भविष्य कक्षाओं में आकार लेता है — जैसा शिक्षक होगा, वैसा ही उसका छात्र बनेगा, और अंततः उसी स्वरूप का समाज विकसित होगा। आज यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा प्रणाली समाज की आवश्यकताओं और जन-आकांक्षाओं से सीधे जुड़ी हो। शिक्षा केवल ज्ञान का संचार न करे, बल्कि शिक्षार्थियों में उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्य और सामाजिक चेतना का विकास भी करे। हमारे देश में शिक्षकों की नियुक्ति उनके अकादमिक योग्यता, डिग्री, डिप्लोमा और सेवा-पूर्व प्रशिक्षण के आधार पर की जाती है तथा व्यावसायिक विकास हेतु समय-समय पर प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। फिर भी यह देखा गया है कि अनेक शिक्षक अपने कार्य के प्रति स्पष्ट उद्देश्य या समर्पण की भावना से वंचित दिखाई देते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों में पेशेवर निष्ठा, आत्ममूल्यांकन की प्रवृत्ति और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त किया जाए ताकि वे शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य — समाज के सर्वांगीण विकास — को प्राप्त करने में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकें।

¹Corresponding शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड

Received: 02-05-2025; Sent for Review on: 26-06-2025; Draft sent to Author for corrections: 28-05-2025; Accepted on: 29-05-2025; Online Available from 10-06-2025

DOI: [10.13140/RG.2.2.10865.13021](https://doi.org/10.13140/RG.2.2.10865.13021)

IJBAS-0099/© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.

पूर्व शोध का अध्ययन - अध्ययनोपरान्त सम्बंधित विषय निम्न शोधार्थियों द्वारा अध्ययन किया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि को विभिन्न स्तर पर किस प्रकार अध्ययन किया गया है, इन अध्ययनों से यह ज्ञात हो सकेगा कि उच्च प्राथमिक स्तर पर किन उद्देश्य निर्धारित करने होंगे, जिससे यह ज्ञात हो सकेगा कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि क्या होंगे।

पचौरी, दीप्ति (2014) ने मैनपुरी जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किया- सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना। सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना। सहायता प्राप्त एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना। अध्ययनोपरान्त राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता उच्च पाई गई जबकि वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता सबसे निम्न पाई गयी।

यादव, सुमन लता (2015) ने ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। उन्होंने अपने शोध अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन को शोध का उद्देश्य निर्धारित किया। अध्ययनोपरान्त निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि-माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी परिवेश के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता ग्रामीण परिवेश के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाई गयी। इसका प्रमुख कारण शहरी परिवेश में अध्यापक नवाचारों से अवगत अति शीघ्र होते हैं, साथ ही तकनीकी प्रगति शहरों में तीव्र गति से होने के कारण एवं शहरी विद्यालयों में सुविधाएँ ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होने के कारण शहरी शिक्षकों में शिक्षण प्रभावशीलता उच्च पाई जाती है।

जोशी, हरिमा एल. (2004) ने गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध में बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि में तुलनात्मक अध्ययन को शोध का उद्देश्य निर्धारित किया है। अध्ययनोपरान्त निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि-बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं उनकी व्यावसायिक जुड़ाव में सकारात्मक संबंध पाया गया। पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक जुड़ाव में सकारात्मक सार्थक संबंध पाया गया, ऐसे शिक्षक जो एकाकी परिवार से आते हैं उनकी व्यावसायिक जुड़ाव संयुक्त परिवार के शिक्षकों से अधिक पाया गया।

सिंह, जयप्रकाश (2013) ने उत्तर प्रदेश के स्ववित्तपोषित कॉलेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने निम्न उद्देश्य बनाए। स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना। शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना। पी.जी.एम.एड. शिक्षक, प्रशिक्षकों तथा पी.जी.एम.एड. नेट/पी-एच.डी योग्यताधारी शिक्षक, शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता में तुलनात्मक अध्ययन करना। अध्ययनोपरान्त निम्न निष्कर्ष पाए गए कि-

- शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में संबंध सकारात्मक एवं सार्थक पाया गया।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि व शिक्षक दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- पी.जी.एम.एड. तथा पी.जी.एम.एड. नेट / पी-एच.डी. योग्यताधारी शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शिक्षण प्रभावशीलता - शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा का संबंध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है। अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिष्यों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाता है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी के संतुष्टि स्तर शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट व शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी शिक्षक के शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षण उपलब्धियाँ प्राप्त होती है। शिक्षक की भूमिका शैक्षिक पर्यावरण में अत्यंत प्रभाव पूर्ण होता है। निश्चित समय, सामग्री, ऊर्जा, प्रयास व धन से वांछित परिणाम लाने हेतु एक शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता के अंतर्गत कुशलतापूर्वक कार्य संपादन होना आवश्यक है। इसके अंतर्गत प्रशिक्षण की आवश्यकता व कार्य में अपेक्षित कौशल का विकास जरूरी है। शिक्षक का यही कौशल उसे अपने कार्य में पारंगत बनाता है अर्थात् बिना किसी बाधा के वह शिक्षण कार्य को प्रभावशाली तरीके से निर्वहन करता है। शिक्षक जिस वातावरण में शिक्षण कार्य करता है, वहीं उनके व्यवहार, संबंध सहयोग की भावना, स्नेह भाव आदि को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक का वातावरण सकारात्मक है तो वह अच्छे भाव के साथ अपने कार्य को संपादित करने के लिए सकारात्मक विचार के साथ पूर्ण करने का प्रयास करता है।

कार्य संतुष्टि- वर्तमान अध्ययन में कार्य संतुष्टि का अर्थ व्यक्ति के कार्य के प्रति रुचि, उससे होने वाली आय की पर्याप्तता, सहपाठियों से संबंध, भावी उन्नति के अवसर, सेवा सुरक्षा की भावना, कार्य की सामाजिक प्रतिष्ठा, कार्य के लिए प्रोत्साहन कार्य संतुष्टि का निर्धारण करता है। कार्य संतुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है, पहला है कार्य और दूसरा संतुष्टि। कार्य का अर्थ है- अपनाया गया कोई व्यवसाय, जिसके लिए कार्य किया जाए और संतुष्टि का अर्थ है- संतोष या प्रसन्नता। अर्थात् अपने कार्य व व्यवसाय से प्राप्त होने वाले आनंद व संतोष को कार्य संतुष्टि कहा जा सकता है।

किसी भी व्यवसाय के किन-किन पक्षों से संतुष्टि प्राप्त होती है, यह समझना अत्यंत आवश्यक है। कार्य कई प्रकार के होते हैं, कोई व्यवसाय करता है तो कोई अन्य सेवाएँ देता है। सरकार द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को सरकारी सेवा तथा निजी संस्था द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को गैर

सरकारी सेवा माना जाता है। इन्हीं सेवाओं के अंतर्गत कार्य की उस सीमा को मापने का प्रयास करना आवश्यक है जिससे संतुष्टि का स्तर ज्ञात हो सके। मुख्यतः इसके दो आधार हैं। एक व्यक्ति को उसकी प्रकृति या स्वभाव व रुचि के अनुसार कार्य मिला हो तथा दूसरा-अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधाएँ व वेतन मिलता हो, जो उसे समाज में जीवन यापन के लिए आवश्यक है। कार्य संतुष्टि को आयु अनुभव, लिंग, कार्य के समय, समय सारणी, बुद्धि, क्षेत्र, शिक्षा, व्यक्तित्व व व्यक्तिगत क्षमताएँ, आकांक्षा, मूल्य एवं आदर्श आदि घटक प्रभावित करते हैं।

सरकारी विद्यालय- वह संस्था जहाँ बालकों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है, विद्यालय कहलाता है। सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों को सरकारी विद्यालय कहा जाता है। सरकारी विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों से है, जिनकी मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदान की जाती है तथा उनका सम्पूर्ण वित्तीय वहन सरकार द्वारा किया जाता है तथा इनका व्यवस्थापन, प्रबन्धन, संचालन तथा पर्यवेक्षण भी सरकार द्वारा किया जाता है। अनुदानित विद्यालय भी इसी श्रेणी में आते हैं।

गैर सरकारी विद्यालय- वर्तमान अध्ययन में गैर-सरकारी विद्यालय शब्द से तात्पर्य संस्था पर समस्त नियंत्रण प्रबंध तंत्र या एनजीओ द्वारा होता है, ऐसे संस्था को गैर सरकारी विद्यालय कहते हैं। गैर सरकारी विद्यालयों से तात्पर्य मान्यता प्राप्त वित्तविहिन विद्यालयों से है, जिनकी केवल मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा दी जाती है लेकिन इनका वित्तीय भार, प्रबन्धन, शैक्षिक प्रशासन, व्यवस्थापन तथा संचालन निजी प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता :- सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना तथा यह जानने की कोशिश करना आवश्यक है कि इसके लिए कौन-कौन से कारक उत्तरदायी हैं, इनका पता लगाकर आवश्यक सुधार किया जा सके। वर्तमान अध्ययन हेतु इस संदर्भ में निम्नांकित उद्देश्य पर विचार किया जा सकता है सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर ज्ञात करना। सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर ज्ञात सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना। सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना। सुझाव - शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि उन शिक्षण संस्थाओं में अच्छा है जहाँ अध्यापकों की सेवा शर्तें सुरक्षित हैं। अध्यापक पेशा व्यावसायिक कार्यक्रम के रूप में जाना पहचाना जाता है। एक व्यक्ति के अध्यापक बनने के बाद उससे अपेक्षा की जाती है कि अध्यापक स्वयं को सतत अद्यतन बनाए रखें। किसी भी शिक्षण संस्था की प्रगति हेतु शिक्षकों की शैक्षिक व्यावसायिक विकास शिक्षण प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि: अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष होता है। सामान्यतः शिक्षा व्यवस्था में सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षण संस्थाएं होती हैं। अर्थात् सरकारी श्रेणी के विद्यालयों के वेतन हेतु धन मुहैया सरकार कराती है, साथ ही शिक्षकों कर्मचारियों की सेवा शर्तों में प्रतिबद्धता आदि निश्चित होती है। गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में आधारभूत सुविधाएँ शिक्षक एवं कर्मचारियों के वेतन भत्ते संस्था संचालित करने वाले समूह व्यक्ति द्वारा एवं सेवा शर्त सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडानुसार व्यवस्थित होता है। अब प्रश्न यह है कि क्या सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि में एकरूपता है या अलग-अलग है? इस संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता है। अतः शिक्षक संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केंद्रक होता है, यदि वह चाहे तो अपने शिक्षण से महान व्यक्तित्व का विकास कर सकता है, जो केवल समाज के एक ही क्षेत्र के लिए नहीं बल्कि सभी क्षेत्रों के लिए आवश्यक है। इसके लिए उसे स्वयं को सकारात्मक भाव के साथ रहना होगा और यह जिम्मेदारी केवल एक शिक्षक की ही नहीं बल्कि समाज की भी है कि वह एक शिक्षक को अपने सकारात्मक विचारों के अंबर के नीचे रहने दे।

सन्दर्भ :-

1. ग्रेट, ई हेनरी (1989); शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नोएडा: कल्याणी पब्लिशर्स।
2. गुप्ता, एस.पी. (2006), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
3. 7 अग्रवाल, आर.एन. (1987), मनोविज्ञान ज्ञान और शिक्षा में मापन एवं बी अस्थाना, मूल्यांकन, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर। कोठारी, सीआर (2004), रिसर्च मेथाडोलॉजी, नई दिल्ली:न्यू एज इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड पब्लिशर्स।
4. गुप्ता, उमेश (2010), आधुनिक भारतीय शिक्षा एक सर्वेक्षण, नई दिल्ली: इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स। पांडे, राम सकल एवं के.एस. मिश्रा (1990), भारतीय शिक्षा की ज्वलंत समस्याएं, इलाहाबाद: वोहरा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. शेखर के (2001), प्राइमरी स्कूल टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम इन इवेलवेलिट स्टडी आफ डाइट, नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस)
- Best, John W. and J.V.Kahan (1986); Research in Education (fifteen Ed.).
6. New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
7. Vijaya Laxmi Ghali (2005); Teacher effectiveness and Job - Satisfaction of women teachers. Education track, Vol.4, No.7, pp.29-30
8. Tomar, S.K. (2015). A Study of Teacher effectiveness and job- Satisfaction and Secondary Schools, Indan Journal Of Resarch, Vol.4, Issue 6, ISSN-1991-PP95-96.
9. Mathur, P& Khurana A. (1996); Teacher's perception of school climate and self actualization,